भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चा: नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

ಭಾರತೇಂದು ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ ಪಿಂಞ ಹರದಾಸ ಅಪ್ಪಚ್ಚ: ನಾಟಕ ಸಾಹಿತ್ಯತ್ರ ತುಲನಾತ್ಮಕ ಅಧ್ಯಯನ

BHARATHENDU HARISHCHANDRA AUR HARADASA APPACHA: NATAKA SAHITYA KA TULANATHMAK ADHYAYAN

मंगलूरू विश्वविद्यालयकी **पी** एच-डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबंध

SYNOPSIS SUBMITED TO MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोधनिदेशक:
डॉ . श्रीधर हेगडे
विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक
फ़ील्ड मार्शल के.एम.कार्यप्पा कॉलेज
(मंगलूरु विश्वविद्यानिलय की इकाई)
कोडगु, कर्नाटक

शोधार्थी:
श्रीमती। सविता पी.पी
नामांकन संख्या: 166302710
विभागाध्यक्ष – हिन्दी विभाग
कावेरी कालेज, गोणीकोप्पल
कोडगु, कर्नाटक

Research Guide
Dr. Shridhar Hegde
Head of the department
Field Marshal K.M.
Cariappa College.
(A Constituent College of Mangalore University)
Madikeri-571201

Research scholar
Mrs. Savitha P.P.
Reg No. 166302710
Lecturer and Head, Dept.of Hindi
Cauvery College, Gonikoppal, S. Kodagu

स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र, विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरू

DEPARTMENT OF POSTGRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI

UNIVERSITY COLLEGE, MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY - 2022

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चा: नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

प्रस्तुत **“भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चाः नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन”** मेरे शोध प्रबन्ध की रूपरेखा है। इसमें योजित शोधकार्य का सार रूप प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं पवित्र भावना को अपनाकर इस महाशोध प्रबन्ध की रूपरेखा आपके सामने पेश कर रही हूँ। अभी तक भारतेंदु हरिश्चन्द्र के नाटकों का अध्ययन होता रहा है। कुछ शोधकर्ताओं ने विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन कर शोधप्रबन्ध, महाशोधप्रबन्ध तथा स्वतंत्र पुस्तकें लिखी हैं। भारतेंदु हरिश्चन्द्र और हरदास अप्पच्चा के नाटकों में निहित राजनीतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक तथा नारी चेतना का अध्ययन करना आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में एक मौलिक प्रयास है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, हरदास अप्पच्चा के नाटकों के बारे में हिन्दी में महाप्रबन्ध नहीं लिखा गया है। कोडवा, कन्नड और अंग्रेजी में आशिंक और प्रत्येक शोधकार्य हुए हैं, हो रहे हैं। जब मेरे शोधनिदेशक डॉ. श्रीधर हेगडे जी ने इस विषय पर महशोध प्रबन्ध लिखने के लिए कहा, तो मैंने इस विषय को सहर्ष स्वीकार किया। **कोडवा भाषा मेरी मातृभाषा है**। आदरणीय डॉ. श्रीधर हेगडे जी ने इस दिशा में सही मार्गदर्शन किया है। उनके शुभाशीष एवं प्रेरणा से ही मैंने इस शोधकार्य संपन्न किया है ।

हमारा भारत विभिन्न फूलों से सजा हुआ एक उद्यान के समान है। इसमें तरह–तरह के फूल हैं, इसमें अन्यान्य रंगों एवं सुगंध के फूल खिलते हैं। वास्तव में हम भारत के चिंतन और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का जायजा लें तो पायेंगे कि अलग–अलग राज्यों की भाषा और संस्कृति, जो बाहर से अलग–अलग दिखाई देती हैं, मूलतः अंदर से एक ही है ।

भारत की भाषाएँ स्वतंत्र रूप में विकसित हुई हैं । उनके साहित्य भी संपन्न हैं । लेकिन भाषा भेद के बावजूद साहित्यिक प्रभाव के संदर्भ में समानता के अनेक विषय दृष्टिगोचर होते हैं। यह भारतीय साहित्य की विशेषता है। यह सब इस बात का संकेत देता है कि भारत की संस्कृति एक ही है। इसीलिए एक ही बात कहीं हिन्दी में कही गयी है तो वहीं कोडवा भाषा में भी कही गई है। जब हर देश के महान आदर्श संस्कृति से जुड जाते हैं, तब हमारे हृदय में एकता की भावना जागृत होती है । यह बात साहित्य को भी लागू होती है । वास्तव में हिन्दी और कोडवा भाषा का संबन्ध भारत के दो विभिन्न भाषा परिवारों से हैं । हिन्दी आर्य भाषा परिवार का अंग है और कोडवा द्राविड भाषा परिवार से सम्बद्ध है। कोडवा भाषा की स्वतंत्र लिपि नहीं है। परन्तु गत शताब्धियों से प्रवर्धमान इनके साहित्य में पर्याप्त समानता दृष्टिगत होती है । संपूर्ण भारत के जन–जन में मौलिक समानता है ।

आधुनिक युग में नाटक संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक–विधा है । मानव जीवन के सबसे अधिक निकट एवं महत्वपूर्ण रूप से नाटक साहित्य है । मनुष्य की आंतरिक वृत्तियों, संस्कारों तथा उसकी समस्त चेतनाओं को नाटक साहित्य समाहित करता है । हिन्दी साहित्य में नाटक साहित्य का विकास पूर्व भारतेन्दु युग से लेकर आजादी के बाद भी देखा जा सकता है । परन्तु नाटक के विकास भारतेन्दु युग से देखा जा सकता है । हिन्दी नाटक साहित्य के विकास में पूर्व भारतेन्दु युग से लेकर समकालीन संदर्भ तक अपना योगदान दिया है । सभी नाटककारों ने अपने–अपने नाटकों में राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं नारी चेतना की चेतना का उद्घाटन किया है ।

तुलनात्मक साहित्यिक अनुसंधान में क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय आदि अन्य पद्धतियों का विकास आधुनिक युग की देन है, जिस प्रकार अनुसंधान सत्य का अन्वेशण करता है उसी प्रकार दर्शन के माध्यम से जीवन और जगत के तात्विक तत्वों का विवेचन होकर सत्य तक पहुँचने का प्रयास

किया जाता है । तुलनात्मक शोध में सामन्य से विशिष्ट और विशिष्ट से विशिष्टतम की ओर जाने का दृष्टिकोण रहता है ।

भारतेंदु के हिन्दी साहित्य में पादार्पण करते ही उसके हर एक अंग एक नवीन चेतना से भर उठा था । नाटक साहित्य भी उनके इस प्रभाव से अनुप्राणित हुआ । यद्यपी भारतेंदु से पूर्व भी हिन्दी में कुछ नाटक रचे गये थे परंतु नाटकों का वास्तविक विकास भारतेंदु युग से ही मानना चाहिए । क्योंकि उनसे पूर्व इस क्षेत्र में किए गये प्रयास नाम मात्र के लिए किये गये थे ।

कोडगु जिला कर्नाटक राज्य में ही नहीं अपितु देश–विदेशों में प्रसिद्ध है। कोडवा का वर्तमान साहित्यिक वाहिनी का परिदृष्य की नींव कोडवा संस्कृति से जुडी है । कोडवा भाषा यहाँ की लोक जिंदगी से जुडी है । कन्नड एवं अंग्रेजी की श्री वृद्धी में कोडवा भाषा–साहित्य की देन अविस्मरणीय है । कोडवा भाषा की कृतियाँ कन्नड, हिन्दी एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनूदित हुई हैं । कोडवा भाषा के साहित्य अन्य साहित्यिक विधाओं को प्रभवित किया है । कोडवा भाषा में निहित नाटक कन्नड तथा अन्य भाषाओं में अनूदित होने पर वहाँ के रंगमंच को भी प्रभावित किया है ।

कोडवा साहित्य द्वारा कोडवा की रहन–सहन, आचार–विचार, वेश–भूषा, खान–पान, नृत्य एवं आचार–पद्धति का परिचय मिलता है ।

‘कोडगु कालिदास’ नाम से ही प्रसिद्ध **अप्पनेरवंड हरदास अप्पच्चा** कवि कोडवा भाषा के आदि कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं । इन्होंने कोडवा भाषा में चार महा नाटकों की रचना की है, जैसे– **कावेरी, ययाती राजा, सुब्रह्ममण्य और सावित्री** ।

कर्नाटक राज्य के कोडगु जिले के हरदास अपच्चा भी इसी मनोवृती के नाटककार थे । लोक और क्षेत्रीय थियेटरों की अपनी सूक्ष्मता और सौंदर्यशास्त्र है जो दुनिया भर में शोधकर्ताओं को

आकर्षित करते है । भारत में दक्षिण कर्नाटक के एक छोटे से जिले कोडगु में थियेटर एक एसा क्षेत्र है जो बहुत ही प्रसिद्ध है । जाहिर तौर पर कोडवा थियेटर के बारे में आम जनता में जागरूकता की कमी मौजूद है । कोडवा थियेटर की ऐतिहासिक इतिहास पेश करने का भी एक प्रयास हो रही है । यह लेख कोडगू की महान कवि हरदास अपच्चा के कामों पर ध्यान दिया जायेगा, जिनके काम 'कोडवातकक' लिखी गयी पहली उपलब्दी साहित्य है । कोडगु में कोडवाओं के लिए अपनी भाषा है जिसे 'कोडवातकक' कहा जाता है ।

इस प्रकार नाटक साहित्य में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने और हरिदास अप्पच्चा ने अपना छाप छोडा है जो आज नाटक के इतिहास में इनका स्वर्णाक्षर में लिखा गया है ।

महाशोध प्रबन्ध की रूपरेखा, चेतना–प्रवाह को ध्यान में रखकर लिखा गया है । चेतना मानसिक प्रक्रियाओं का समन्वित रूप है । वह मनुष्य को सामाजिक कार्यक्रमों से संबन्ध रखती है। मनुष्य की चेतना मात्र मन के साथ ही नहीं उसकी शारीरिक यथार्थ से भी निर्धारित होती है । साथ ही साथ, दूसरे लोगों के संपर्क से, व्यावहारिक आदतों से निर्धारित होती है । मानव अपनी कार्यवाही का मूल्यांकन अपने और दूसरे लोगों के बीच सामाजिक प्रतिमानों से करता है । भाषा में रक्षित ज्ञान और अर्थ मानव की भावनाओं, इच्छाओं तथा अन्य मानसिक क्रियाओं को एक चेतना में स्वीकार करते हैं । इतिहास द्वारा अर्जित ज्ञान, राजनीतिक विचार, कला की उपलब्धियाँ, नैतिकता, धर्म, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आदि समग्र रूप से व्यक्त होते हैं । वे मानव के अनेक क्रियाकलापों पर प्रभाव डालते हैं । लोग अपने सृजनात्मक आयामों को व्यावहारिक रूप प्रदान करते हुए प्रकृति और समाज को रूपांतरित करने का प्रयास करते हैं ।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र और हरदास अप्पच्चा ने भी यही प्रयास किया है ।

इन चेतना प्रवाह को ध्यान में रख कर उभय नाटककारों की रचनाओं का अनुसंधान करने लक्ष्य है । अध्ययन की सुविधा के लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं हरदास अप्पच्चा का नाटक साहित्य अध्ययन छः अध्यायों में विभाजित कर अनुसंधान किया गया है ।

शोधकार्य की प्रेरक भावभूमि एवं विषय चयनः

हिन्दी एवं कोडवा भाषा को अपनी–अपनी महत्व पूर्ण स्थान है। मेरा जन्म दिल्ली में हुआ। मेरे पिताजी सेना में सुबेदार के पद पर थे। उसके बाद अमृतसर, जलंधर, श्रीनगर और झांसी में कार्यरत थे। इसलिए सहज ही मेरे मन में हिन्दी के प्रति रूची बढी। मेरी मातृभाषा कोडवा होने पर सहज ही इस भाषा के प्रति मेरी गहरी आत्मियता और भी बढी। इससे मुझे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपने शोधकार्य में आगे बढने का प्रोत्साहन मिला । बचपन से ही मुझे नाटक–साहित्य में ज्यादा लगाव रहा है। मनुष्य के समूह से परिवार की रचना होती है । मैं सोचती हूँ कि नाटक जीवन का प्रतिबिम्ब है। इसका प्रभाव समाज पर पढता है। मनुष्य अपनी आवश्यक्ताओं के अनुसार जीवन–नाटक से जुडा रहता है। व्यक्ति , परिवार और समाज का बनना–बिगडना मनुष्य की आवश्यक्ताओं पर आधारित है । नाटक में जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है, जो आज युग की मांग भी है। मैंने अपने शोधकार्य में चेतना के धरातल उभय नाटककारों के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। राजनीतिक , सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं नारी चेतना को आधार मान कर शोध का अध्ययन किया गया है।

मेरे अनुसंधान कार्य की मुख्य प्रेरणा मुझे आदरणीय गुरू शोध-निदेशक डॉ. श्रीधर हेगडे से मिली है। डॉ. श्रीधर हेगडेजी ने अपनी प्रतिभा के अनुसार मुझे निर्देशन दिया। मुझे श्री अडडंडा कार्यप्पा जी ने [निदेशक, रंगायण, मैसूर] भी सहायता की है। परिणाम स्वरूप मेरा हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चंद्र

और कोडवा साहित्य में हरदास अप्पच्चा के नाटकों पर तुलनात्मक अनुसंधान कार्य संपन्न हुआ। इस क्षेत्र में अनुसंधान की संभावनाएँ अधिक नजर आई । मेरे विषय चयन के पीछे मेरा उद्देश्य यह रहा है कि इन अमर नाटककारों की विविध चेतनाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना था।

प्रस्तुत विषय की उपादेयता एवं प्रासंगिकता :

"भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चाः नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रस्तुत शोधकार्य अत्यंत प्रासंगिक है। **भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चा** क्रमशः हिन्दी और कोडवा के उन्नीसवीं – बीसवीं सदी के सुप्रसिद्ध नाटककार हैं । वर्तमान समय में उनकी रचनाएँ युग की मांग है । उनके नाटकों में राजनीतिक , सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं नारी चेतना में आज के संदर्भ में नई दिशा मिलती है।

शोध की उपलब्धियाँ:-

"भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चाः नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन"

से राजनीतिक , सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं नारी चेतना का तुलनात्मक अध्ययन से उभय नाटककारों के नाटक साहित्य का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही साथ शोधकार्य से मिली चेतनाओं के आधार पर शोध की नई उपलब्धियां मिली हैं।

जैसे–

- हिन्दीतर प्रदेश में हिन्दी भाषा के साथ तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
- कोडवा साहित्य का लोकप्रिय नाटकों का परिचय कराने की कोशिश की गई है।
- हिन्दी नाटक साहित्य और कोडवा नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

- कोडवा नाटक साहित्य और भाषा साहित्य, आचार–विचार, रीति–रिवाज, रहन सहन आदि विशेषताओं को प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा हिन्दी साहित्य के विराट क्षेत्र में लाया गया है ।

पूर्ववर्ती शोध–कार्य :–

- **"भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चाः नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन"** अब तक प्रस्तुत विषय पर किसी का शोधकार्य नहीं हुआ है।
- अंग्रेजी में कोडगु के ज्योति जयप्रकाश ने हरदास अप्पच्चा कवि पर जे.एन. यु. में एम. फिल. डिग्री प्राप्त की है।
- कन्नड में हरदास अप्पच्चा के बारे में डा. रेखा, श्री अड्डुंडा कार्यप्पा, बाचरणियण्डा अप्पण्णा, श्री नागेश कालूरु, श्री ऐतिचंडा रमेश उत्तप्पा, आदि ने शोध और लेखन कार्य किया है।

पूर्ववर्ती शोध–कार्य में जो शोध–कार्य नहीं हुआ, उन विषयों पर मैंने गहरा अध्ययन किया और प्रस्तुत विषय से अवगत हो कर प्रस्तुत कार्य संपन्न किया। अतः मैंने **"भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चाः नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" तुलनात्मक अध्ययन कर**प्रस्तुत करने का मेरा विनम्र प्रयास किया है ।

प्रस्तुत विषय पर अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उभर रहे थे :

- उभय नाटककारों के जीवन पर साहित्य का कैसा प्रभाव हुआ?
- उभय नाटककारों के नाटककारों की क्या विशेषता है?
- इन दोनों नाटककारों ने अपने साहित्य में चेतनाओं द्वारा कौन–सी समस्याओं को चित्रित किया है?

नाटक साहित्य में उभय नाटककारों का स्थान एवं रचनाओं की प्रासंगिकता क्या रही है?

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

प्रस्तुत **"भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चाः नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" चेतनाओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन** प्रस्तुत किया गया है। शोध विषय का अनुशीलन करते समय इस विषय के विविध चेतनाएं मेरे सामने आए जो स्वतंत्र रूप से अनुसंधान के विषय हो सकते हैं। प्रस्तुत अनुसंधान की अपनी सीमा होने के कारण उन विविध नाटकों में निहित चेतनाओं का विस्तृत विवेचन करना साध्य नहीं है ।

नए अनुसंधान कर्ता भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कर सकते हैं–

- उभय नाटककारों नाटकों का समग्र अध्ययन कर सकते हैं।
- उभय नाटककारों नाटकों के सम–सामायिक चेतना ।
- उभय नाटककारों नाटकों में निहित नए विमर्श, नाटककों के पुनर मूल्यांकन, आदि ।

शोध–प्रबंध की रूपरेखाः–

प्रस्तुत शोध–कार्य को तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा के लिए छः अध्यायों में विभाजित किया गया है, जैसे, संक्षेप में शोधप्रबन्ध की रूपरेखा की अनुक्रमणिका इस प्रकार है, जैसे –

अनुक्रमणिका

अध्ययन की सुविधा के लिए छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय :भारतेंदु हरिश्चंद्र और हरदास अपच्चा के नाटक साहित्य

१. भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक साहित्य

२. हरदास अपच्चा के नाटक साहित्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चा के नाटकों में राजनीतिक चेतना

2.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राजनीतिक चेतना

2.2 हरदास अप्पच्चा के नाटकों में राजनीतिक चेतना

2.3 उभय नाटककारों में निहित राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन, विश्लेषण तथा संश्लेषण, निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा हरदास अप्पच्चा के नाटकों में सामाजिक चेतना

3.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में सामाजिक चेतना।

3.2 हरदास अप्पच्चा के नाटकों में सामाजिक चेतना ।

3.3 उभय नाटककारों में निहित सामाजिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन, विश्लेषण तथा संश्लेषण। निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा हरदास अप्पच्चा के नाटकों में ऐतिहासिक चेतना

4.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में ऐतिहासिक चेतना।

4.2 हरदास अप्पच्चा के नाटकों में ऐतिहासिक चेतना ।

4.3 उभय नाटककारों में निहित ऐतिहासिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन, विश्लेषण तथा संश्लेषण। निष्कर्ष

पंचम अध्याय: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा हरदास अप्पच्चा के नाटकों में पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना

5.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना

5.2 हरदास अप्पच्चा के नाटकों में पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना

5.3 उभय नाटककारों में निहित पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन, विश्लेषण तथा संश्लेषण निष्कर्ष

षष्ठम अध्याय : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा हरदास अप्पच्चा के नाटकों में नारी चेतना

6.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में नारी चेतना

6.2 हरदास अप्पच्चा के नाटकों में नारी चेतना

6.3 उभय नाटककारों में निहित नारी चेतना का तुलनात्मक विवेचन, विश्लेषण तथा संश्लेषण निष्कर्ष

उपसंहार

अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय :

भारतेंदु हरिश्चंद्र और हरदास अपच्चा के नाटक साहित्य

१. भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक साहित्य

२. हरदास अपच्चा के नाटक साहित्य

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक साहित्य का संपूर्ण परिचय दिया गया है। इसके बाद में हरदास अपच्चा के नाटक साहित्य का संपूर्ण परिचय दिया गया है। अंत में इस अध्याय का विश्लेषण एवं संष्लेषण करने के बाद निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं अप्पच्चा के नाटकों में राजनीतिक चेतना पर विस्तार से विवेचन किया गया है। इस अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र की राजनीतिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके उपरांत हरदास अप्पच्चा के नाटकों में निहित राजनीतिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। बाद में उभय नाटककारों की राजनीतिक चेतना का विवेचन प्रस्तुत कर निष्कर्ष बताया किया गया है।

तृतीय अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं अप्पच्चा के नाटकों में सामाजिक चेतना पर विस्तार से विवेचन किया किया गया है। इस अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र की सामाजिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया किया गया है। इसके उपरांत हरदास अप्पच्चा के नाटकों में निहित सामाजिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया किया गया है। बाद में उभय नाटककारों की सामाजिक चेतना का विवेचन प्रस्तुत कर निष्कर्ष बताया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं अप्पच्चा के नाटकों में ऐतिहासिक चेतना पर विस्तार से विवेचन किया गया है। इस अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र की ऐतिहासिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके उपरांत हरदास अप्पच्चा के नाटकों में निहित ऐतिहासिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।   बाद में उभय नाटककारों की ऐतिहासिक चेतना का विवेचन प्रस्तुत कर निष्कर्ष बताया गया है।

पंचम अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं अप्पच्चा के नाटकों में पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना पर विस्तार से विवेचन किया गया है। इस अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र की पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जायेगा । इसके उपरांत हरदास अप्पच्चा के नाटकों में निहित पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। बाद में उभय नाटककारों की पौराणिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विवेचन प्रस्तुत कर निष्कर्ष बताया गया है।

षष्टम अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं अप्पच्चा के नाटकों में नारी चेतना पर विस्तार से विवेचन किया गया है। इस अध्याय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र की नारी चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके उपरांत हरदास अप्पच्चा के नाटकों में निहित नारी चेतना का विश्लेशण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। बाद में उभय नाटककारों की नारी चेतना का विवेचन प्रस्तुत कर निष्कर्ष बताया गया है ।

अंत में **उपसंहार** के रूप में उपर्युक्त सभी अध्यायों पर संपूर्ण ढंग से प्रकाश डालकर उचित सिद्धांत के आधार पर संपूर्ण अनुशीलन किया गया है। इस संदर्भ में सभी अध्यायों का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा निष्पन्न विविध चेतनाओं का अध्ययन का सार प्रस्तुत किया गया है।

मैंने शोधकार्य की रूपरेखा तैय्यार करते समय आदरणीय डॉ. श्रीधर हेगडे जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। इस विषय के बारे में मेरी सहोद्योगी, कन्नड एवं कोडवा साहित्य की वरिष्ट महिला–लेखिका डा. रेखा वसंत से चर्चा की। अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरे पास शब्द नहीं है । इनके अतिरिक्त मेरे इस कार्य में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में जिन्होंने सहायता की है, उन सब के प्रति कृतज्ञ हूँ । मैं अपने पति श्री अप्पच्चु का सम्मानपूर्वक स्मरण करती हूँ । मेरी बेटियाँ तष्मा और भुवना दोनों इस कार्य में सहायता प्रदान की हैं । मैं अपने परिवार के समस्त सदस्यों के प्रति आभारी हूँ,

जिनकी प्रेरणा मुझे सदा मिलती रही है । प्रस्तुत शोधकार्य करते समय मुझे संयोजिका डा. नागरत्ना राव जी और डा. सुमा टी. रोडन्नवर की ओर से सहायता मिली है। अतः मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

Research Student

SAVITHA P.P.

M.A., B.Ed.

Research Guide

DR. SHRIDHAR HEGADE

M.A. Ph.D.

Associate Professor
Department of Hindi
F.M.K.M.C. College
Madikeri

परिशिष्ठ

अ.

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं हरदास अप्पच्चा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का व्यक्तित्व, जन्म, माता–पिता, बचपन, शिक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, मृत्यु और कृतित्व

1.2 हरदास अप्पच्चा का व्यक्तित्व, जन्म, माता–पिता, बचपन, शिक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, मृत्यु और कृतित्व

= भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं अप्पच्चा का व्यक्तित्व व्यक्तित्व एवं कृतित्व है । इस अध्याय में भारतेंदु जी के जन्म, माता–पिता, बचपन, शिक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, मृत्यु और कृतित्व के बारे में विषद रूप से विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद हरदास अप्पच्चा के जन्म, माता–पिता, बचपन, शिक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, मृत्यु और कृतित्व के बारे में विषद रूप से विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा। अंत में उभय रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

आ.

परिशिष्ट :

<u>आधार ग्रंथ सूची: हिन्दी</u>

1. भारततेंदू ग्रंथावली खंड 1_ मिथिलेश पांडेय, नमन प्रकाशन, 2016
2. भारतेंदु ग्रंथावली खंड 2_मिथिलेश पांडेय, नमन प्रकाशन, 2016
3. भारतेंदु ग्रंथावली खंड 3, मिथिलेश पांडेय, नमन प्रकाशन 2016
4. भारतेंदु नाटकों में सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चेतना का स्वरूप, डॉ. नवनीत कुमार, आकाश पब्लिशर्स 2010
5. भारतेंदु हरिश्चंद्र एक व्यक्तित्व चित्र, ज्ञानेंद्र जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2004

<u>आधार गृंथसूची: कोडवा :</u>

1. कावेरी नाटक, हरदासा अप्पच्चा, कोडव साहित्य अकादमी, 2010
2. कोडवा अरिवोले/kodava dictionary/बि. चेट्टीचा उत्तय्या, तंगंम्मा उत्तय्या। कोडव सांस्कृतिक अध्ययन पीठ,मगंलूरू विश्वविद्यालय,2016
3. हरादासा अप्पच्चा कविरा नाल नाटका, कोडव साहित्य अकादमी, मडिकेरि,2010
4. ययाति राजा, हरदासा अप्पच्,चा कोडवा साहित्य अकादमी ,1929
5. सावित्री, हरादास अप्पच्चा, शारदा प्रेस, 1929
6. सुब्रमण्या, हरादासा अप्पच्चा, शारदा प्रेस, 1929
7. हरदासा अप्पच्चा कविरा नाल नाटका, हरदासा अप्पच्चा, कोड़वा साहित्य अकादमी, 2010
8. पट्टोळे पळमे, नडिकेरियंडा चिण्णप्पा, कर्नाटक कोडवा साहित्य अकादमी, 2006

कन्नड़:

1. अप्पच्चा कविया नाल्कु नाटकगळु, हरदासा अप्पच्चा, कोडवा साहित्य अकादमी, 2011
2. कोडगु गेजेटियर, 1992
3. पुराणभारत कोश, यज्ञ नारायण उडुपा, कन्नडा पुस्तक प्राधिकार,बेंगलुरु,2003
4. पुराण नाम चूड़ामणि, बेनगल रामा राव, प्रसारांग मैसूर विश्वविद्यालय, 1992
5. भारतदा गेजेटीयर कर्नाटक राज्य कोडगु जिला, सूर्यनात कामत, प्रसारंग लिपि मुद्रण, बेंगलुरु,1992

English :

1. एपीग्राफिया कर्नाटका कोडागु जिला/कन्नडा अध्ययन संस्था मैसूर विश्वविद्यालय, 1972

सहायक ग्रंथ सूची: हिंदी

1. तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप समस्याएं, डॉ, भ.ह. राजूरकर, वाणी प्रकाशन, 2015
2. तुलनात्मक साहित्य सैद्धांतिक परिपेय हनुमान प्रसाद रावल,राज कमल प्रकाशन,2015
3. प्रसाद युगीन हिंदी नाटक, भगवती प्रसाद शुक्ला, 1971
4. प्रमुख राजनीतिक विचारों को की चिंतन धारा, प्रोफेसर जय नारायण पांडेय, जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2007
5. नाट्यानुवाद सिद्धांत और विवेचन, प्रोफ़ेसर, अच्छृत्तन, वाणी प्रकाशन, 201
6. भारतीय भाषाएं और साहित्य, डॉक्टर राजमल बोरा, वाराणसी प्रकाशन, 2015
7. यौन मनोविज्ञान, ऐवलाक एलिस, 2002

8. प्रमुख राजनीतिक विचारकों कि चिंतन धारा, प्रोफेसर जय नारायण पांडेय,भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2007
9. सामकालीन हिंदी नाटक, डॉ, जसवंत भाई डी,पांड्या ज्ञान प्रकाशन,2005
10. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच, ज्ञानेंद्र मोहन, वाणी प्रकाशन, 2011
11. सांस्कृतिक प्रतीक कोश, सोमनाथ पाठक, प्रभात प्रकाशन, 2001
12. सप्त आदर्श महिलाएं, डॉ.चंद्रिका प्रसाद शर्मा, परमेश्वरी प्रकाशन, 2009
13. साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन भारतीय संस्कृति का संदर्भ, सुशील बाला, आर्यप्रकाशन मंडल, 2013
14. हिंदी साहित्यः नव विमर्श, जसवंत भाई. डी. पांड्या, ज्ञान प्रकाशन, 2005
15. हिंदी नाटक उद्भव और विकास, डा.दशरथ ओझा, राजपाल एंड सन्स, 1984
16. हिंदी नाटक विचार तत्व, अवधेश गुप्ता, 1884
17. हिंदी के प्रमुख आधुनिक नाट्य कारों के नाटकों में लोक तत्व, डॉ. सत्यवीर सिंह बोरिया, नमन प्रकाशन,दिल्ली, 2015.
18. हिंदी साहित्य उद्भव और विकास,हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,2015.
19. हिंदी नाटक दृश्य कल्पना के बदलते आयाम, डॉ.नर्वदेश्वर राय ,मशीन प्रकाशन वाराणसी, 2012
20. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान, 2010

सहायक गृथं : कन्नड़:

1. आधुनिक कन्नडा नाटक, मरुला सिद्धप्पा ,1993 2,आदिश्री कावेरी, एदुर्कला शंकर नारायण भट्ट,श्री रामा कृष्ण प्रकाशन,भागमंडला, कोडगु जिला, 1987
2. अमर कवि अप्पच्चा, अड्डुंडा कार्यप्पा, 125 वीं जन्मोत्सव समिति,1994
3. इग्गुत्त्प्पामहात्मे एदुऋकल शंकर नारायण भट्ट, श्री रामा कृष्ण प्रकाशन, भागामंडल, कोडागु ,1999
4. इग्गुतप्पा देवरू कोडगू, चंगप्पा, परदंडा, 2000
5. कन्नड़दल्ली ऐतिहासिका नाटकगलु, डॉ.सी,जी.उषा देवी, कन्नड़ अध्ययन और संशोधना विभाग, मानसा गंगोत्री ,मैसूर २०१०
6. कर्नाटकदा परंपरे, कन्नडा मत्तु संस्कृति इलाके, बेंगलूरु, 1992
7. कर्नाटका रंगभूमि विकास, रंगनाथ.हेच.के,सुरुचि प्रकाशन सरस्वती पुरम ,मैसूर, 1978
8. कोडगिना इतिहास, बि,एन कृष्णय्या, प्रसारांग, मैसूर विश्वविद्यालय,1974
9. कोडगिना कैमडगलु, नागराज, एम.जी. कन्नडा साहित्य परिषत ,बेंगलुरु, 2004
10. कोडावा रंगभूमिया कोडव तना अड्डुंडा.कार्यप्पा, कोडवा साहित्य अकादमी,मड़िकेरी, 2013
11. कोडवर्, गणपति, बी.ड़ी. शारदा प्रेस,मंगलूर,1967
12. कोडगिना सिरी ,चिरंतन, सत्यश्री प्रकाशन, मैसूर, 1991
13. कोडवा रंगभूमि, तीतीरा, रेखा वसंत, प्रसारांग मंगलूर विश्वविद्यालय , 2006
14. कन्नडा रंगभूमि, रंगनाथ. हेच.के. सुरुचि प्रकाशन, सरस्वती पुरम मैसूर, 1990
15. कोडागु विवरणे, विजय पूणच्चा, प्रसारांग कंन्नडा विश्वविद्यालय हंपी, 2005

16. कोडवा सांस्कृतिक अध्ययन, ऐतिचंडा रमेश उत्तप्पा, कन्नडा साहित्य परिषत,बेंगलुरु, 2014

17. कोडागु साहित्य संस्कृति दर्शन, कन्नडा साहित्य परिषत, मड़िकेरी,2010

18. कोडवरू, भीमांडा. कुशालप्पा, नेचर ग्राफिक्स मैसूर, 1993

19. कोडवरा जीवना मत्तु पद्धतिगलु,कोडगु ,1967

20. कोडगिना कालिदासा हरदासा अप्पच्चा कवि ,ऐतिचंडा. रमेश .उत्ताप्पा, कर्नाटक साहित्य अकैडमी मड़ीकेरी, 2017

21. नाटक रंग कृति ,प्रसन्ना, अक्षर प्रकाशन ,हेग्गोड

22. नातक साहित्य : डा. श्रीधर हेगडे: चेतना बुक हाउस: २०१५

23. नाट्यशास्त्र ,नीनासम रंगा शिक्षण केंद्र, 1982

24. ययाति, गिरीश कर्नाड मनोहर ग्रंथ माला धारवाड़, 1988

25. रंगा अन्वेषणे,नीनासम रंग शिक्षण केंद्र,1982,

26. वसाहतुशाही और नगरीकरण, प्रसारांग ,कन्नाडा विश्वविद्यालय हंम्पी 2007

27. वास्यायन कामसूत्र : अनु : दि. वेंकट जि. भस्मे, समाज पुस्तकालय, धारवाड: १९९५

सहायक गृथं सूची–कोडवा

1. अप्पच्चा कविरा नेप्पु,उल्लियडा, पूवय्या,कोडवा मक्कडा कूटा,2018

2. अमरा कवि अप्पच्चा,अड्डुंडा कार्यप्पा,अप्पच्चा कवि 125वीं जन्मोत्सव समिति,1994

3. कोडगु गेजेटियर,1992

Shayak grunth Suchi English

1. **Are kodavas Hindus, P.T.Bopanna,2018**
2. **Coorg invented, K.M Lokesh, The forum for Kodagu studies, 1998**
3. **history of kodvas, B.D. Ganapathi, 1980**
4. **Rise and Fall of the Coorg State, P.T Bopanna, Railing stone publications, 2009**

Gazetteer: Mysore and Coorg,Lewis rice, Government of Karnataka, 2004

Internet: Google

शब्दकोशः भारतीय संस्कृति कोषः लीलाधर शर्मा पर्वतीय राजपाल एंड संन्स, 2003